THE HERALD of Christian Science
informal translations from the publications of the Christian Science Publishing Society

अतीत को पीछे छोड़ देना

Leaving the past behind

Christian Science Monitor April 15-21, 2002

चलना सीखने के लिए, छोटे बच्चे घुटनों के बल रेंगना पीछे छोड़ देते हैं। जब एक शिशु गिद्ध अंत में उड़ना चाहता है, वह पेड़ की डालियों पर सब तरफ फुदकना बंद कर देता है। लोगों को शराब पीना छोड़ने के लिए, अपने लिए बेहतर काम ढूँढने पड़ते हैं। जब लोग अपने विवाहित जीवन के प्रति दुबारा वचनबद्ध हो जाते हैं, वे दफ्तर में लोगों के साथ इश्कबाज़ी करना बंद कर देते हैं।

जीवन में आगे बढ़ने के लिए, सोचने तथा आचरण करने की पुरानी आदतों को पीछे छोड़ने का बहुत अधिक हाथ है। यह हमारी ज़िन्दगियों में **परमेश्वर** के आशीष का स्वाभाविक हिस्सा है जो आचरण करने और सोचने के उन तरीकों से, जो हमारे लिए बहुत गौण बन चुके हैं, बाहर निकलने में हमारी सहायता करता है।

परन्तु क्या अतीत को पूरी तरह भुला पाना संभव है? क्या हम अच्छी घटनाओं को भूलना चाहते हैं जो घटित हुई थी? हम निराशा और असफलता की पीड़ा को कैसे भुला सकते हैं?

बाइबल में अति महान परन्तु अति विनम्र इंसानों में से एक ने अपने साथी ख्रीस्तियों को यह शब्द लिखे, " भाइयों, मैं ऐसा नहीं मानता कि मुझे बोध हो चुका है : लेकिन यह एक काम मैं करता हूँ, कि जो बातें पीछे रह गई हैं, उन्हें भूल कर, उन बातों की ओर बढ़ता हुआ जो आगे हैं . . . . . " (फिलिप्पियों 3 :13 , 14)

अतीत को भुलाने का एकमात्र तरीका, यह विश्वास करना है कि आज की अच्छाई बीते हुए कल की अच्छाई के समान संतोषजनक होगी। जब हमारी ज़िन्दगियों में अत्याधिक अच्छाई आ जाती है, इस सोच में खिसक जाना बहुत आसान होता है कि जब वह अध्याय समाप्त होता दिखाई देता है, हमारा काम भी पूरी तरह समाप्त हो चुका है। आशा को पुनः उत्तेजित करने के लिए हमें **परमेश्वर** को अच्छाई का स्त्रोत मानने की आवश्यकता है। हम **परमेश्वर** के निरन्तर प्रेम से स्वंय को नए सुअवसरों, संबधों और प्रतिभाओं में दिखाने की उम्मीद कर सकते हैं।

इसका अतीत की निराशाओं का समाधान करने में बहुत अधिक हाथ है। हमारा अतीत कितना ही भद्दा, घृणित या खेदपूर्ण दिखाई क्यों न दे, हमारे पास एक सहारा है। प्रार्थना के शाँत शरण स्थल में हम मान्यता दे सकते हैं कि बुराई जो इतनी सम्मोहक होती है, हमारी ज़िन्दगियों में **परमेश्वर** की विद्यमानता की वास्तविकता का स्थान नहीं ले सकती। **परमेश्वर** के प्रेम की सर्वशक्तिमानता स्वयं को सुनिश्चित, आशा –उत्प्रेरक और जीवन परिवर्तित करने वाले रास्तों में जानने का आग्रह करती है। नवीनीकरण तथा पुनःस्थापन **परमेश्वर** की रचना के उदार संचालन के स्वाभाविक परिणाम होते हैं।

** जो शब्द बड़े अक्षरों में लिखे गये हैं वह परमेश्वर के समानार्थक शब्द हैं।

For this translation in English and other translations in [language], please see http://translations.christianscience.com

Translation © 2011 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 100 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

क्रिश्चियन साँयस की पाठ्यपुस्तक का एक बुनियादी कथन मानसिक दोहरावों को तोड़ने में सहायता करता है। मेरी बेकर एडी ने लिखा, ''**जीवन** दिव्य **मन** है'' (''साँयस एण्ड हैल्थ विद् की टू दॅ स्क्रिपचर्स'' पृष्ठ 469)

परमेश्वर जीवन का उद्गम है और **परमेश्वर मन** है जो कि सारी चेतन सोच का स्त्रोत है। हमारे विचार **परमेश्वर** की अच्छाई, शक्ति तथा प्रेम के साथ अधिक मेल खा सकते हैं। अतीत के द्वारा असक्षम हो जाना सुझाव देता है कि हमें वर्तमान में जीने के लिए प्रेरणा नहीं मिल सकती।

लेकिन **परमेश्वर** के महान आशीषों में से एक, प्रेरणा द्वारा **उसके** प्रेम के नित्य संदेश हैं जो सेहत देने वाले, प्रसन्नता–उत्प्रेरक होते हैं और जो हमें अधिक फलदायक और उपयोगी बनाते हैं। हमारी नित्य प्रार्थना हमें उन संदेशों को सुनने के लिए समर्पित करती है। जब हम उन प्रेरणाओं के अनुसार जीने की चेष्टा करते हैं, अतीत के साथ दिलचस्पी, आज की अच्छाई तथा सेवा के सुअवसर में व्यस्तता को समर्पण कर देती है।

मुझे अपने अतीत में से एक सब से कठिन चीज़ अपने बचपन की कष्टदायक यादों पर विजय प्राप्त करना थी। कई वर्षों तक मैंने अपनी माँ के प्रति रोष को बनाए रखा। जब मैनें देखा मेरी भावनाएं कितनी घातक थी, तब मैं पश्चाताप के साथ जीने लगी। मेरी प्रार्थना ने मुझे उन से मिलने की कोशिश करने के लिए और उनके साथ होने वाली कठिनाइयों के लिए प्रार्थना करने का इच्छुक बनाया। धीरे–धीरे हमने एक साथ हसँने के तरीके ढूँढे। आवश्यक माफी मिली और अब हममें बहुत बढ़िया सहायक दोस्ती है। उनके साथ होना अब आरामदेह तथा आसान है।

ऐसे बहुत से संबंध है जिनकी मैनें क्षतिपूर्ति नहीं की, परन्तु मुझे भरोसा करना होगा कि **परमेश्वर** अपने प्रत्येक बच्चे से बात कर रहा है और उनका मार्गदर्शन कर रहा है। यह दोनों तरह के लोगों को सम्मिलित करता है जो मेरे बहुत करीब रहे हैं और वे जो अत्याधिक अशांत करने वाले रहे हैं। यह घंमड होता है जो हमें दूसरों के बारे में सोचते हुए स्वयं को संकेत बिंदु की तरह प्रयोग करने के लिए कहता है। जितना अधिक हम **परमेश्वर** को अपने बच्चों से संर्पक के बिन्दु की तरह देखते हैं, ठीक उसी तरह जैसे प्रकाश की किरणें अपना स्त्रोत सूर्य में प्राप्त करती हैं, हम दूसरों को उन स्थितियों में नहीं थामे रखेंगें जिन में से वे निकल चुके हैं।

अतीत के सबक सब से बेहतर अतीत में न रह कर, अपितु स्वंय को वर्तमान में वचनबद्ध कर के सीखे जीते हैं। आज की प्रेरणा अब हमें न केवल अधिक प्रसन्न तथा अधिक उपयोगी बनाएगी, यह हमें पुनः आश्वासन देगी कि जो कुछ भी अतीत के द्वारा छिन गया दिखाई देता है, **परमेश्वर** के प्रेम की पूर्णता उसे फिर से लौटा देती है।

Translation © 2011 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 100 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.